मां की कीमत

(पुस्तक के कुछ अंश)

बात लगभग 6 साल पुरानी है। मै यानी करन अपने हाई स्कूल के एग्जाम पास करके गर्मी की छुट्टियां बिताने के बेहतरीन तरीके सोचने मै व्यस्त रहता था आज कल। इस बार दोस्तो मै सबसे अच्छा बल्ला लाना है, पैसे बचाने है ताकि एडिडास का बल्ला खरीद लू साथ ही सुबह दौड़ने भी जाना है ताकि क्रिकेट में देर तक दम लगा सकूं। उस उम्र में दुनिया इन्हीं सब चीजों के इर्द गिर्द घूमती रहती है क्यूकि मां बाप बच्चो को यही बताया करते है बेटा हाई स्कूल तक पढ़ लो फिर खूब खेलना। तब तो दिमाग यही तक रहता था कि बस एक बार एग्जाम निकले फिर तो रोज गदर काटनी है मैदान में।

अच्छा बचपन भी कितना मासूम होता है मां बाप की बातो में आकर हम सब खूब मेहनत से पढ़े और अच्छे नंबरों से पास हुए ये सोचकर कि अच्छे नंबर आएंगे तो पिताजी की दांट नहीं मिलेगी खेलने के बदले। खैर इन्हीं सब चीजों के बीच दिन कट रहे थे। आगे............

बात लगभग 6 साल पुरानी है। मै यानी करन अपने हाई स्कूल के एग्जाम पास करके गर्मी की छुट्टियां बिताने के बेहतरीन तरीके सोचने मै व्यस्त रहता था आज कल। इस बार दोस्तो मै सबसे अच्छा बल्ला लाना है, पैसे बचाने है ताकि एडिडास का बल्ला खरीद लू साथ ही सुबह दौड़ने भी जाना है ताकि क्रिकेट में देर तक दम लगा सकूं। उस उम्र में दुनिया इन्हीं सब चीजों के इर्द गिर्द घूमती रहती है क्यूकि मां बाप बच्चो को यही बताया करते है बेटा हाई स्कूल तक पढ़ लो फिर खूब खेलना। तब तो दिमाग यही तक रहता था कि बस एक बार एग्जाम निकले फिर तो रोज गदर काटनी है मैदान में।

अच्छा बचपन भी कितना मासूम होता है मां बाप की बातो में आकर हम सब खूब मेहनत से पढ़े और अच्छे नंबरों से पास हूए ये सोचकर कि अच्छे नंबर आएंगे तो पिताजी की दांट नहीं मिलेगी खेलने के बदले। खैर इन्हीं सब चीजों के बीच दिन कट रहे थे। एक हफ्ते के भीतर सारे दोस्त वापस आने वाले थे फिर होना था आईसीसी का टूर्नामेंट, हां हमारे लिए गर्मी के दिन किसी टूर्नामेंट से कम थोड़ी होते थे। क्रिकेट बैट के बारे में मां के मोबाइल में ढूंढ़ ही रहा था कि मां की आवाज आई नीचे से...

'करन, नीचे आना जरा।'

दिमाग में यही आया कि मां मोबाइल के लिए बुला रही है। अं दिनों मां के पास अच्छा फोन था पिताजी ने लेकर दिया था क्योंकि वो अक्सर काम के सिलसिले में बाहर रहते थे और मां की अपने आने जाने से लेकर सूचना दिया करते थे। लेकिन वो फोन मां का कहने भर का था, वो इसलिए क्योंकि वो उनके पास तब तक रहता था जब तक पापा का फोन आने वाला होता था, बाकी समय उसपर मेरा हाथ रहता था।

सारा दिन मोबाइल में घुसे रहना आदत सी बन गई थी क्योंकि आईसीसी के टूर्नामेंट में टाइम था अभी।मां को तो ये तक नहीं पता था कि मोबाइल के नेट पैक भी करवा रखा है मैंने। भाई नई नई उम्र थी अपनी और वैसे भी शौक बड़ी चीज है ये तो जानते ही है आप लोग।

खैर मां की आवाज आते ही फोन का नेट बंद करके तुरंत ही नीचे की ओर भागा और फटाक से मां के सामने हाज़िर हो गया। जैसे ही मां के सामने पहूंचा बगल में कुछ मेहमान बैठे हूए थे जिनकी तरफ अभी तक मेरा ध्यान तक नहीं गया था। कि वो एक थे या दो - चार, उस समय तो बस ये था के मां मोबाइल को लेकर नाराज ना हो गई हो और मुझे अपने शौक से हाथ धोना पड़े,अच्छा बचपन में ये बात भी खूब होती है, अपने गलत कामो पर हम खुद पकड़े जाने के डर से इतना डरते है कि मानो 420 के मुक़दमे में फंसे हो।

मां ने कहा,"इनसे मिलो ये हमारे नए मेहमान।" एकाएक मेरा ध्यान मेहमानों कि तरफ गया तो एक आंटी थी लगभग मां की उम्र की लेकिन मां से अच्छी सेहत में थी और साथ में एक लड़की थी,नहीं एक सुंदर लड़की थी,नहीं बहुत सुंदर थी, नहीं बहुत ज्यादा सुंदर थी,नहीं यार वो तो एक अप्सरा थी।

अप्सरा भी शर्मा जाए देखकर ऐसी सुंदरता थी उसमें, उस देखकर शारूख खान का गाना याद आया "तुम्हे जो मैंने देखा ,तुम्हे जो मैंने जाना....जो होश था वो तो गया।।।।"

बचपन में हर वाक्या किसी ना किसी पिक्चर का ही सीन लगता है क्योंकि वो उमर में शनिवार और रविवार शाम 4 बचे टीवी के सामने पसर जाते थे और पिक्चर देखते थे क्योंकि यही दो दिन थे जिनमें फ्री की पिक्चर देखने को मिलती थी। और कोई पिक्चर छूटती भी नहीं थी इसलिए सीन तो मानो दिमाग में बसे हुए थे।

ये उन आंटी की लड़की थी जो साथ में बैठी थी, बातचीत में पता चला कि आंटी जी रायपुर में साथ में रहती थी जब हम लोग किराए के कमरे में रहते थे लेकिन उनके पति की अचानक मृत्यु हो जाने के बाद वे अपने पति के कारोबार में लग गई और हम लोग लखनऊ में आकर बस गए और फिर बात धीरे- धीरे उनके बारे में सब भूल गए। आज अचानक से देखकर अच्छा तो लगा लेकिन हैरत भी हुई कि इतने सालो बाद इन लोगो ने हम लोगों को ढूंढ़ कैसे लिया। लेकिन दिमाग इन सब चीजों में काम और खूबसूरती में ज्यादा लगा हुआ था। सच कहें तो जिंदगी में पहली बार इतनी खूबसूरत लड़की देखी थी मैंने और देखी तो देखता ही रह गया। मां ने परिचय करवाया," ये है मेरा नालायक बेटा करन,पढ़ता कम खेलता ज्यादा है। क्रिकेट का बहुत शौकीन है, उसके आगे तो अपनी मां को भी भूल जाए इतना शौकीन।" मां के परिचय ने मेरे फर्स्ट इंप्रेशन की तो छीछालेदर कर दी। समझ नहीं आ रहा था कि मां ने इज्जत बनाई है या रूमाली रोटी की तरह उछाल दी हवा में पर अब क्या कर सकते है, मां तो मां होती है। बची खुची इज्जत समेटते हुए मै बोला ,"आंटी मै क्रिकेट बहुत अच्छा खेलता हूं, जिलास्तर से भी खेल चुका हूं और अपने स्कूल का चैंपियन प्लयेर भी हूं लगातार दो सालो से।" आंटी ने मेरी सराहना की और बोली सही है बेटा पढ़ाई के साथ साथ खेलना भी बहुत जरूरी है मेरी बेटी काव्या भी क्रिकेट की बहुत शौकीन है बहुत मैच देखती है टीवी पर लेकिन खेलना नहीं आता इसे। आंटी इतना कहकर रुक गई और मुझे ऐसा लगा जैसे उन्होंने बात अधूरी छोड़ दी हो, मुझे लगा था वो कहेंगी बेटा तुम इसे भी सीखा देना अपने साथ लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा और माहौल को देखते हुए मैंने भी आगे कुछ बोलना उचित नहीं समझा लेकिन उस अप्सरा का नाम जरूर जान गया।

मां बोली " अच्छा अब जाओ मेहमानों को ऊपर के कमरे दिखा दो जाकर, आज से ये लोग हमारे साथ ही हमारे किराएदार बनकर रहेंगे। मां की बाते सुनकर मानो अंदर खुशी की लहर दौड़ गई और मै फौरन आंटी का सामान उठाकर चल पड़ा और आंटी जी और काव्या मेरे पीछे पीछे बाकी सामान लेकर ऊपर की ओर आने लगी।

कमरे का दरवाजा खोलकर मैंने आंटी जी को बताया ये उनका कमरा है,बगल में किचेन है बाहर बरामदे की तरफ बाथरूम और उसके बगल मै एक और कमरा जो बाहर बालकनी की तरफ खुलता है और बताते हूए मैंने उस कमरे से बालकनी का दरवाजा खोल दिया बालकनी के बाहर गोमती नदी का विहंगम दृश्य दिखता था और साथ ही ठंडी हवा आती थी नदी को छूकर और साथ ही लखनऊ जैसा चमचमाता शहर किसी भी बालकनी से दिखने वाले सबसे सुंदर नजरो में एक था ये नजारा,इसे देखते ही काव्या खुशी से चहक उठी और दौड़ते हूए बालकनी की तरफ आई और मुझे हाथ से खिसकाते हूए खुद बाहर की ओर देखने लगी और बोली "This place is so awesome.I love this place mamma." हालांकि उस उम्र में ज्यादा इंग्लिश नहीं आती थी लेकिन उसके चहरे की मुस्कुराहट और थोड़ा बहूत शब्दों पर ध्यान देकर समझ आ गया कि उसे जगह पसंद आ गई है । आंटी जी सामान किनारे करते हूए बोली "अच्छा अब बाहर बाद में देखना पहले थोड़ा सामान सेट करलो और मेरे कपड़े निकाल दो मै नहाने जा रही हूं फिर मुझे यहां एक ऑफिस भी जाना है कुछ काम से।" कहते हूए आंटी तौलिया लेकर बाथरूम की तरफ चली गई। माहौल को देखते हुए मै भी वहां से बाहर आ गया साथ ही काव्या की तरफ भी देख रहा था कि वो देखती है या नहीं पर अफसोस बंदी ने एक बार भी नजारे उठाकर मेरी तरफ नहीं देखा। मैंने भी इस रजामंदी ना समझते हुए वापस नीचे की ओर मुड़ चला ।

नीचे किचेन में आकर मां से बाते करते हूए मेहमानों के बारे में जानने की कोशिश की तो मां ने बोला , बड़े सीधे लोग है बेचारे वक़्त के मारे थे एक समय लेकिन वक़्त ने ही फिर से बना दिया। भाईसाहब बहूत अच्छे नेचर के थे, तुझे बहूत प्यार करते थे तुम और काव्या जब भी साथ में खेलते तो भाईसाहब बहूत खुश होते थे साथ में देखकर। और मां अचानक से बोलते बोलते चुप हो गई और फिर से काम में लग गई। मुझे फिर से उनकी अधूरी बात का एहसास हूआ जैसे आंटी ने शुरुआत में अधूरी बात बोली थी, खैर अब ज्यादा दिमाग इधर उधर ना चलाकर मै अपने क्रिकेट में फिर लग गया। टूर्नामेंट आने वाला था आखिर।

शाम का वक्त:

मै अपनी छत पर बाल को दीवार के सामने से बंधे कपड़े सुखाने के तार से बांधकर नीचे लटकाकर बल्ले से मारकर खेल रहा था तभी पीछे से मां और काव्या आई। मां के हाथों में तीन चाय थी और साथ में पारले जी बिस्कुट एक कटोरी में। मां से चाय रेलिंग पर रखते हुए कहा चाय गरम है पी लो रोज की तरह खेलते खेलते भूलना मत, इतना कहकर मां हमेशा की तरह अपनी चाय उठाकर पड़ोस की आंटी की तरफ बतियाने चली गई। उन दिनों शाम को छत पर लगभग सारी औरतें आ जाती थी और चाय के साथ घर गृहस्थी की बाते मानो कथा की तरह शुरू हो जाती थी। कभी एक बोलती सब सुनते कभी दूसरी बोलती सब सुनते कभी तीसरी, यही होता रहता था।लेकिन उस पुराने माहौल में एक चीज नई थी आज, वो थी काव्या। उस बेचारी को समझ नहीं आ रहा था वो क्या करे, सुबह से बालकनी में लटक लटककर चारो तरफ तो देख डाला अब और क्या देखे। कभी आंटी की तरफ जाती तो कभी मेरी तरफ आकर आधे रास्ते से लौट जाती। 7-8 चक्कर लगाने के बाद आखिर में वो मेरी तरफ आकर बोली ये ऐसे खेलने से क्या मिलता है तुम्हे। तबसे लगे पड़े हो एक ही जगह पर ऐसे कोन सा क्रिकेट खेला जाता है। उस मासूमियत भरे सवाल का जवाब देते हुए मै हसकर बोला कि ये क्रिकेट में शॉट्स मारने के तरीके सीखने में काम आता है,इससे मै नए नए शॉट्स आजमाता रहता हूं और बेहतर करने की कोशिश करता हूं। "ये तुमने कहा से सीखा?"

काव्या ने पूछा। मां के मोबाइल से इंटरनेट से देखा मैंने, खिलाड़ियों को इसी तरह शॉट्स की प्रैक्टिस करवाई जाती है।

कहते है ना कमान से निकला तीर और जुबान से निकले शब्द वापस नहीं आते। मैंने काव्या को अपना राज बता दिया कि मैंने मां के फोन में इंटरनेट करवा रखा है। काव्या ने भी बात तपाक से पकड़ी और पूछा आंटी को पता है तुमने इंटरनेट डलवाया है उनके फोन में? मैंने बिना जवाब दिए बाल पर फिर से बैट चलाना शुरू कर दिया। काव्या मेरा जवाब समझ चुकी थी और बोली " एक शर्त पर नहीं बताऊंगी आंटी से!" मैंने बिना सोचे समझे हा बोला और कहा मां से मत बताना वरना मेरे हाथ से मोबाइल छीन लेंगी,पूरे महीने की पॉकेट मनी जोड़कर रिचार्ज करवाया है। काव्या ने बल्ला हाथ में लिया और बोली मुझे भी क्रिकेट खेलना सिखाना है अब तुम्हे,तो बताओ कब से प्रैक्टिस शुरू हो रही है मेरी। ये तो उससे भी बड़ी मुसीबत, पूरे घर में छत पर ही प्रैक्टिस हो पाती थी सही से उस पर अगर छत पर किसीने इन्हे मेरे साथ देख लिया तो बल्ला मेरे ऊपर चलते देर नहीं लगेगी, अगर ना किया तो मोबाइल हाथ से चला जाएगा और फिर............

सोचकर ही पसीना आने लगा।

मरता क्या ना करता, मैंने रिस्क लेना ज्यादा ठीक समझा बजाए के सीधा हार मान ले। और इसी बहाने काव्या से दोस्ती भी हो जाएगी,ये सोचकर मैंने कल से उसकी प्रैक्टिस करवाने को बोलकर बल्ला फिर से ले लिया और कमरे में आकर लेट गया। देर शाम तक आंटी जी भी लौट आई और फिर सब लोगो ने साथ में खाना खाया। मेरी और काव्या की तो बिना ज्यादा बात हूए ही अच्छी दोस्ती हो गई थी , और हम दोनों ही मुस्कुरा मुस्कुराकर खाना खा रहे थे। अचानक से मां की तरफ नजर पड़ी तो देखा वो मुझे ही देख रही है फिर खाना खत्म करते हूए बोली करन देख आंटी जी अब रोज इसी वक़्त आया करेंगी, जब तक तेरी छुट्टी चल रही है तब तक तू काव्या का साथ देते रहना ताकि उसे भी यहां की जानकारी हो जाए वरना ये अकेले कैसे आएगी जाएगी कहीं पर भी। और हां, उसे ज्यादा परेशान ना करना वरना समझ लेना तू, मां ने हिदायत देते हुए बोला। मैंने भी हां में सिर हिलाकर खाना जारी रखा।

खाना खाकर मां किचेन में बर्तन साफ करने लगी और आंटी उनका हाथ बटाने चली गई। मै खाना खाकर टीवी खोलकर बैठ गया उस समय 2011 वर्ल्ड कप खत्म हूआ ही था और रोज पुराने मैचेस की हाईलाइट दिखाते रहते थे और ये मेरा पसंदीदा काम था खाना खाने के बाद से लेकर सोने तक। टीवी देखते देखते सो जाना आदत सी बन गई थी मेरी, छुट्टियों की वजह से मां भी ज्यादा कुछ नहीं कहती थी । काव्या भी पीछे की तरफ कुर्सी डालकर बैठ गई और टीवी देखने लगी। मां और आंटी सब काम निपटाकर छत टहलने चले गए, नीचे मै और काव्या ही बचे सिर्फ। अच्छा मेरे घर में कॉकरोच बहूत है,रात के वक्त फौज बनाकर घूमते है, मुझे तो ये पता था लेकिन काव्या को ये नहीं पता था शायद। जैसे ही रात में कॉकरोच का टाइम शुरू हूआ वैसे ही एक दो आंगन में टहलते हूए नजर आ गए। काव्या ने जैसे ही देखा बिना कुछ बोले मेरे बगल में आकर सोफे पर पैर ऊपर करके बैठ गई। मैंने भी हंसते हूए उसे थोड़ी जगह और दे दी और बोला अब आदत डाल लो उनकी यहां रोज रात में इनकी सेना निकलती है। काव्या भी डर छुपाते हूए बोली मै इनसे नहीं डरती, वो तो पैर दर्द हो रहे थे कुर्सी पर बैठे-बैठे जभी इधर आकर बैठ गई। हम दोनों की क्रिकेट को लेकर ही कुछ बाते करने लगे और फिर मै ना जाने कब सो गया। रात में नींद खुली तो देखा काव्या भी सोफे के उस तरफ सो रही है।मैंने सोचा कि इतनी रात गए मम्मी और आंटी अभी तक लौटकर नहीं आई क्या छत पर से। नींद में ही मै मां के कमरे की तरफ गया,वहां मां नहीं थी फिर मै सीढ़ियों से धीरे धीरे ऊपर की तरफ गया। सीढ़ियों पर चलते हूए मुझे कुछ रोने के जैसी आवाज सुनाई दी और फिर तुरंत मेरी नींद गायब हो गई ऊपर कमरे में पहूंचकर देखा तो मम्मी किसी बात पर रो रही थी शायद और आंटी चुप करा रही थी, या फिर दोनों रो रहे थे,या फिर सिर्फ आंटी। कुछ समझ नहीं आ रहा था, मै जैसे ही आगे कमरे मै घुसा अचानक से लाइट आ गई और उजाला हो गया कमरे में। इतने में दोनों लोगो ने शायद मुझे आते हूए देख लिया और खुद को सही कर लिया तुरंत। मैंने भी मां से नीचे चलने को बोला तो मां तुरंत साथ में नीचे आने लगी

और आंटी से बोली "आप काव्या को नीचे ही लेटे रहने दो उसे रात में जगने के बाद नींद नहीं आती है,मै काव्या के साथ में लेट जाऊंगी।" आंटी ने भी हां में सिर हिला दिया और अपना बिस्तर सही करने लगी। आखिर मां को कैसे पता काव्या की नींद के बारे में वो तो आज पहले दिन रुकी है और बचपन में बहुत छोटी थी जब हम लोग यहां आ गए थे, नींद की वजह से मैंने भी मां से पूछना जरूरी नहीं समझा और उनका हाथ पकड़कर नीचे आ गया, मां ने मुझे अपने कमरे में भेजा और खुद काव्या के पास चली गई। ये जिंदगी में पहली बार था जब मां ने किसी कि वजह से मुझे दूर किया हो, हालांकि ये कोई बड़ी बात नहीं थी, वो बेचारी अकेले लेटी थी एक नए घर में शायद इसलिए मां ने उसके पास जाना जरूरी समझा लेकिन मेरे लिए ये छोटी बात भी नहीं थी। उस रात मै ढंग से सो भी नहीं पाया लेकिन सुबह नींद पड गई और मैं देर से उठा,तब तक आंटी ऑफिस जा चुकी थी मां किचेन में थी और काव्या पता नहीं कहा थी। मैं बिना देर किए तुरंत किचेन में गया और मां से कल रात में उनके रोने के बारे में पूछा जाकर। मां थोड़ा ठिठकते हुए बोली कि ऐसा तो कुछ नहीं था, तुम नींद में थे जभी तुम्हे ऐसा लग रहा होगा। और फिर गुस्सा दिखाते हुए बोली कि एक तो देर से सोकर उठा है ऊपर से नई नौटंकी दिखा रहा है,चल जल्दी से कुल्ला दातून करले फिर नाश्ता करले, 9 बजा दिया सोते सोते। मैंने भी घड़ी की तरफ देखा और तुरंत बाथरूम की तरफ भागा और सीधा ब्रश लेकर दांत मांजने लगा।

दोपहर में:

मै नाश्ता करने के बाद फिर बाहर दोस्तो से मिलने चला गया था,दोपहर को लौटा तो मां और काव्या दोनों किचेन में खूब हंस हंसकर बाते कर रही थी जैसे बहुत पहले से जानती हो। मैंने भी सोचा कि ऐसे किराएदार तो पहली बार मिले है जो मेरे ही घर में खाना पीना बनाकर खा रहे है साथ में हाहा-होहो भी मचाए है। मै भी हाथ पैर धोकर किचेन में घुस गया और सलाद उठाकर खाने लगा,इतने में काव्या बोली कि खाने से पहले सलाद खाना क्या मोबाइल में देखे हो? उसका संकेत साफ समझ आ रहा था मुझे। मै मां से रिझने लगा और खाना खाने के लिए बोलने लगा। मां ने फिर खाना खिलाया और साथ में काव्या को भी बुलाकर बिठा लिया,हद तो तब हो गई जब उस भी मेरी थाली में खिलाने लगी और तो और काव्या भी बड़े मजे से तारीफ कर करके खाने लगी। आधी भूख तो मर गई आधा पेट भर के पानी पिया और चुपचाप ऊपर जाकर बरामदे में जाकर बैठ गया और सोचने लगा कि आखिर मां को क्या हो गया है? इससे पहले तो किराएदारों से बड़ी सख्ती दिखाती थी लेकिन इस बार साथ में सुला रही है,साथ में खिला रही है। सोचते सोचते बैठे बैठे कुर्सी पर सो गया मै पता ही नहीं चला, अचानक से नींद खुली देखा काव्या खड़ी है

सामने बाल्टी भर पानी लेकर। मैंने पूछा ये पानी का क्या करने जा रही हो? बोली एक बार छींटे मारे थे अगर ना उठते तो पूरा पानी तुम्हारे सिर पर डाल देती। मै पागलों की निगाहों से उसे देखने लगा तो बोली पागल मै नहीं तुम हो दिन में सो रहे हो वो भी कुर्सी पर, कमर दर्द होने लगेगी बेटा। और बाल्टी लेकर चलती बनी, मै भी सोचने लगा अजीब पागल लड़की है जगाने के लिए कोई नहलाता है क्या?

शाम को पापा का फोन आया तो मै फाटक से फोन लेकर मम्मी के पास पहूंच गया और फोन देकर वहीं बॉल से खेलने लगा। जब तक मम्मी बतियाती तब तक मै वहीं पर रहता ताकि जैसे ही फोन कटे मै फिर से अपना काम शुरू करूं।लेकिन रोज की तरह आज मम्मी कुछ दूसरे तरीके से हां-हम्म कर रही थी ज्यादा बोल नहीं रही थी और अचानक से जोर से बोलने लगी "कि तुम क्या चाहते हो कि तुम्हारी नाकामी मै सारी जिंदगी अपने नाम से लेकर घूमती रहूं?" और इतना बोलकर फोन काट दिया उन्होंने। पापा बाहर रहते थे साल भर शायद एक दो दिन के लिए आते हो लेकिन मां और पापा के बीच ऐसी बात कभी नहीं सुनी। ये पता नहीं क्या हो रहा था मेरे घर में कुछ समझ नहीं आ रहा था मुझे लेकिन इतना समझ आ गया था कि कुछ हुआ जरूर है और मुझे ये पता लगाना ही है कि आखिर माजरा क्या है इन सब बातो को पीछे ।

मैंने एक तरकीब सोची कि मां के फोन में ऑटो रिकॉर्डिंग ऑन कर दूं। अगली बार जब पापा का फोन आएगा मुझे खुद पता चल जाएगा, हालांकि ये ग़लत था लेकिन उस वक़्त बात पता करने के लिए इससे अच्छा मेरे दिमाग में कुछ नहीं था। रात के खाने के बाद फिर वही कार्यक्रम, मै और काव्या टीवी देख रहे थे और आपस में बाते भी करते जा रहे थे जबकि मां और आंटी छत पर थी। काव्या मुझसे मेरे स्कूल के बारे के मेरे दोस्तो के बारे में और सबसे ज्यादा क्रिकेट के बारे में बाते कर रही थी और मुझे भी उससे बाते करना अच्छा लग रहा था। मै जब भी उससे बाते करता तो बस उसे देखता ही रहता,उसकी खूबसूरती मुझे बरबस ही अपनी तरफ खीच लेती थी। कई बार बाते करते हूए मैंने उसके करीब जाने की कोशिश की लेकिन उसने बड़ी चालाकी से खुद को दूर कर लिया और बाते करते करते उसने अचानक से मुझसे पूछा तुम मेरी मां को पहले से जानते हो, मैंने हां में सिर हिला दिया फिर उसने पूछा तुम मेरे पापा को जानते थे? उसके सवाल में बड़ी उत्सुकता और एक अनजानी सी चिंता जैसी थी, ना जाने क्या था लेकिन मैंने बिना किसी चिंतन के ना में सिर हिला दिया। मैंने फिर ऊपर की ओर रुख किया और ऊपर गया तो मां और आंटी कुछ बाते कर रही थी और मां कुछ कह रही थी जैसे कि लल्ला को कुछ ना बताना उस कुछ नहीं पता है और बिटिया को भी मना कर देना बताने से। मैंने आज तक उससे कुछ नहीं बताया और ना ही उसे कभी इस बात का एहसास होने दिया कि....... इतना कहकर मां ने अचानक मेरी तरफ देखा और बोली लल्ला तुम, इतनी रात में भी जाग रहे हो चलो नीचे सो चलकर वरना कल फिर 9 बजे उठोगे। इतना कहकर वो फिर मुझे नीचे लेकर चली आई और सुला दिया।

मुझे इतना तो समझ आ गया था के ये सब जो हो रहा है किसी वजह से ही हो रहा है बिना किसी वजह के नहीं हो रहा है कुछ,ये मेहमानों का आना और मां का ऐसा बर्ताव फिर पापा से ऐसे बात करना फिर ये सब सोच सोचकर दिमाग खराब हो रहा था। अब बस एक ही रास्ता था कि जब पापा का फोन आएगा इस बार जभी कुछ पता चलेगा अब लेकिन पापा ने अगले 4-5 दिन तक फोन ही नहीं किया और ना ही मम्मी ने अपनी तरफ से बात करने का कोई जिक्र किया। उन्हें मानो कोई फिक्र ही नहीं थी उनकी, ये सब मुझे बड़ा अजीब लग रहा था। हारकर मैंने काव्या को निशाना बनाया कहानी जानने के लिए और एक दिन उसे साथ में अपनी क्रिकेट टीम में खिलाने का झांसा देकर मसला जानना चाहा, लेकिन वो भी कम कलाकार नहीं थी पहले खिलाने पर फिर बताने पर राजी हूई और खिलाने के बाद फिर पलट गई अपनी बात से, ये दांव भी उल्टा पड गया। आखिरकार सातवे दिन पापा का फोन आया और उन्होंने मम्मी से सिर्फ एक मिनट बात की फिर काट दिया। मैंने मम्मी से फोन लेकर छत पर जाकर जैसे ही रिकॉर्डिंग ऑन किया तो पापा की आवाज आई,

" सुनो, करन मेरा भी बेटा है मेरा खून नहीं है तो क्या हूआ मेरा नाम तो जुड़ा है उसके साथ,उसे किसी और का नाम ना दो वरना मै तुमसे रिश्ता खत्म कर लूंगा।"

ये बात सुनकर ही मेरे पैरो के नीचे जमीन खिसक गई, मै अपने पापा का बेटा नहीं हूं!!!! आखिर पापा ऐसे क्यों बात कर रहे थे और मां ने कुछ बोला क्यों नहीं ये सब सुनकर। एसे ही ना जाने कितने सवाल मेरे दिमाग में घर कर गए और अब इनका जवाब सिर्फ एक इंसान दे सकता था और वो थी मेरी मां।

मैंने तुरंत मां की ओर रुख किया और ऊपर की ओर जाने लगा के तभी फिर मुझे किसी के रोने कि आवाज सुनाई पड़ी, ये सुनकर ही मुझसे रहा नहीं गया और मै सीधा मां के पास पहूंचा और चिल्लाकर बोला," आखिर ये घर में हो क्या रहा है? आप रोज रात को रोती रहती है और फिर पापा ने आपसे इस तरह बात की ओर अपने कुछ कहा क्यों नहीं। मां ने जैसे ही सुना उनके आंसू सूख गए और तुरंत मुझे बुलाकर पूछा,

"तुझे कैसे पता पापा ने मुझसे क्या कहा, आखिर चाहता क्या है तू,क्या मै तुझसे प्यार नहीं करती, क्या मै तुझे खुश नहीं रखती।" मां के इतने सवाल सुनकर मै घबरा गया और उनसे लिपटकर रोने लगा। मां भी बिना कुछ बोले मुझे नीचे लेकर आ गई और लिटा दिया, मै भी बिना कुछ बोले सो गया।

अगले दिन सुबह:

घर में सब सामान रखा हूआ है, शायद आंटी का है। इसका क्या मतलब है? मै तुरंत कमरे से बाहर आया तो पता चला आंटी और काव्या वापस जा रही है मैंने मां से पूछा कि आखिर अचानक से ये लोग कैसे जा सकते है। इन्होंने कमरे का एक महीने का किराया दिया था या नहीं। आज मुझे उनके रुकने से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था सच में मै खुद भी चाहता था कि अगर जा रहे है तो चले जाएं, जबसे ये लोग आए है तबसे ही घर में उल्टा पुल्टा हो रहा है सब। खैर, आंटी ने सब सामान उठाया और बाहर की तरफ रखने लगी। उस दिन काव्या मेरी तरफ बड़ी अजीब निगाहों से देख रही थी, शायद उसका जाने का मन नहीं था, या फिर उसने कुछ कहना था मुझसे। पता नहीं क्या था लेकिन मैंने भी ज्यादा रुख नहीं मिलाया और फिर वो लोग जाने लगे तो आंटी ने मेरे सिर पर हाथ रखा और फिर बोली खुश रहना बेटा। कभी कुछ जरूरत पड़े तो बिना कहे आ जाना हमारे पास, हम भी तुम्हारे अपने है, ये कहकर आंटी फिर आगे चली गई और पीछे पीछे काव्या भी चली गई। मै फिर एक असमंजस में पड़कर रह गया कि आखिर ये क्यों कहा आंटी ने ।

आंटी और काव्या चली गई और फिर कभी लौटकर नहीं आई। इस बात को 5 साल से ऊपर हो गए और मै भी धीरे - धीरे इस बात को भूल गया।

बात तब की है जब मै इंटर पास करके एक प्रतिष्ठित संस्थान से बीटेक की पढ़ाई कर रहा था और तीसरे साल में प्रवेश लिया था, मां अब बूढ़ी हो चली थी और पिताजी उसी तरह मेहमानों कि तरह आते जाते रहते थे। आज माइक्रोवेव इंजीनियरिंग का असाइनमेंट बना रहा था बहूत मशगूल होकर। छत पर बैठकर हमेशा की तरह ही अपने काम में तल्लीन था। हां तबसे और अबके जमाने में बहूत कुछ बदल गया है अब आईसीसी के टूर्नामेंट नहीं होते, गर्मियों की छुट्टियां बस नाम की रह गई है,सब बदल गया है अब सिवाय एक चीज के, वो है मेरी मां का फोन। आज भी वैसे ही चुराकर नेट पैक करवाना आज ही वैसे ही चलाना सब वैसा ही है। असाइनमेंट बनाते हूए ही एकदम से फोन की घंटी बजी कोई नया नंबर था, मैंने उठाया तो उधर से एक हैलो कि आवाज आई और ये बेशक काव्या की आवाज थी। मैंने भी इधर से हैलो बोला और वो बोली " करन बोल रहे हो ना,सुनो तुमसे कुछ बात करनी है। मां की तबियत खराब चल रही है बहुत,तुम्हे देखना चाहती है प्लीज एक बार आ जाओ उन्हें कुछ कहना है तुमसे।"

मैंने पूछा कि मेरे आने का क्या मतलब है और आंटी मुझे क्यों देखना चाहती है? और उनकी तबियत को क्या हुआ है?"

वो बोली ," वो सब मै तुम्हे बताऊंगी लेकिन उससे पहले तुम घर आओ मां से मिलो आकर वरना मै तुम्हे कभी माफ नहीं करूंगी, और सुनो अपने घर में किसी से मत बताना वरना कोई तुम्हे आने नहीं देगा।" उसने तुरंत एक पता मेरे नंबर पर मैसेज किया और बोली एड्रेस दे दिया है यह पर आ जाओ जितनी जल्दी हो सके।

मैंने फिर पूछा," तुम्हे मेरा नंबर कहा से मिला?" बोली जब तुम्हारे घर पर थी तब लिया था तुम्हारे फोन से, शुक्र है तुमने बदला नहीं और सुनो अब जल्दी से आओ भैया ज्यादा वक़्त नहीं है अब।" इतना कहकर उसने फोन काट दिया।

"भैया" ये सब ना जाने क्या सोचकर बोल दिया उसने। और भैया क्यों बोला उसने, पता नहीं कहा से फोन आ गया ये? बड़ी मुश्किल से सुकून से पढ़ाई कर रहा था और ये नया झंझट शुरू हो गया। आगरा जिला का पता दिया था मैसेज में , खैर अब आंटी की तबियत की बात थी तो मैंने टालना उचित नहीं समझा और घर में आगरा घूमने की बात कहकर शाम में ही निकल गया ट्रेन से। सुबह आगरा पहूंचकर मैंने उस एड्रेस को पता किया और फिर टैक्सी से चल दिया। लगभग एक घंटे के सफर के बाद मै वहां पहूंच गया। "कान्हा उपवन" नाम था, उपवन कम हवेली ज्यादा लग रहा था। जबर्दस्त हवेली थी सफेद संगमरमर की नक्काशी बनी हूई मानो दूसरा ताजमहल हो आगरा में। खैर दरवाजे पर चौकीदार को जैसे ही अपना पता बताया उसने तुरंत मेरे हाथो से बैग ले लिया और "सलाम साहब" करते हूए अन्दर की तरफ ले चलने लगा। रास्ते में बड़बड़ करते हुए आंटी की कहानी बोलता रहा। "मेम साहब बहूत याद करती है आपको, आप बड़े दिनों बाद आए जबसे गए है!" आइए आपको मेम साहेब के पास ले चलते है और उसने एक कमरे का दरवाजा खोल दिया । दरवाजा खुलते ही आंखे चौंधिया गई ,दूधिया रोशनी में सफेद नक्काशी की चमक अन्दर एक सुंदर से महल का नजारा था ,मै तो ये सब देखकर भ्रम में पड़ गया के कहीं गलत पते पर तो नहीं आ गया लेकिन जभी काव्या अन्दर से आई और मुझसे गले लगते हूए बोली," भैया आप आ गए। मां बहूत बीमार है आपसे मिलने को बोल रही है मै आपको नहीं बुलाना चाहती थी लेकिन मां की जिद के आगे हम मजबूर होना पड़ा।" मुझे कुछ समझ नहीं आया कैसे रिएक्ट करे लेकिन मैंने काव्या को अलग करते हुए पूछा "आंटी कहां है?"

वो मुझे एक दूसरे कमरे में ले गई और फिर सामने आंटी लेती हूई थी एक बिस्तर पर बगल में मेडिकल की तमाम चीजें और एक नर्स कुछ दूरी पर बैठी हुई थी। मुझे देखकर वो धीरे से उठकर

बैठने लगी कि मै दौड़कर उनके पास पहुंचा और उन्हें लेटे रहने को बोला, फिर वो धीरे से लेट गई और बोलने लगी,

"मुझे माफ़ करना बेटे मैंने तुझे जिस लिए बुलाया है उसे सुनकर शायद तू खुद पर काबू ना कर पाए लेकिन तुझे करना होगा और अगर तू इस बात का भरोसा दिला सके तो मै बताऊं तुझे!"मैंने रजामंदी दिखाते हुए उनके हाथ पर हाथ रख दिया। फिर आगे जो बात हुई उसने मेरी जिंदगी बदल दी।

"बात बहूत पहले की है, तुम्हारे पिताजी एक समय हमारे यहां नौकरी करते थे और तुम्हारी मां मेरे घर में पड़ोस के कमरे में रहती थी उन्हें हम लोगो (आंटी और उनके पति) ने घर में रखा था क्योंकि तुम्हारी मां बहूत ही अच्छे विचारों की महिला था और पिताजी भी एक अच्छे और खुद्दार व्यक्ति थे। उनके आने के बाद हमारे कारोबार में अच्छी वृद्धि होने लगी थी और तुम्हारे पिताजी और अंकल(काव्या के पिताजी) मिलकर बहूत अच्छे तरीके से कारोबार को आगे बढ़ा रहे थे। तुम्हारे अंकल को क्रिकेट का बहूत शौक था और वे अपने राज्य की क्रिकेट टीम के एक अहम खिलाड़ी भी थे और साथ ही साथ क्रिकेट में नाम भी कमा रहे थे। एक समय आया जब तुम्हारी मां और पिताजी में काफी तनाव बढ़ गया और वो लोग अक्सर कटे कटे रहने लगे। मेरे पूछने पर भी तुम्हारी मां ने इस बारे में कुछ ज्यादा नहीं बताया। फिर एक दिन तुम्हारे पिताजी काम के सिलसिले में कुछ हफ्तों के लिए बाहर गए हूए थे कि अचानक मेरी मां की तबियत खराब हो जाने के कारण मै अपने पीहर लौट गई, एसे में अंकल की जिम्मेदारी तुम्हारी मां को सौंप दी क्योंकि वो शौकीन मिजाज के थे और शराब के भी शौकीन थे। तुम्हारी मां ने मेरे आने तक अंकल की जिम्मेदारी अपने सिर पर ली और फिर मै पीहर चली गई।

लगभग एक महीने बाद मै अपने पीहर से लौटी इसी बीच मेरी मां का देहांत भी ही गया था, मै वहां से लौटकर धीरे धीरे फिर से अपनी जिंदगी में रमने लगी थी लेकिन मैंने ध्यान दिया कि तुम्हारी मां अब पहले की तरह मुझसे बात नहीं करती थी और अंकल जी से भी उनका बोलना लगभग बंद हो गया था। 2-3 महीने बीतने पर मुझे पता चला कि तुम्हारी मां पेट से है और मैंने खुशी से उन्हें पास बुलाया और साथ में रहने का इंतजाम करवा दिया ताकि मै उनका अच्छे से ख्याल रख सकूं। तुम्हारी मां ने काफी मना किया लेकिन मेरे काफी कहने पर वो मान गई और साथ रहने लगी। कुछ दिन बीते के मुझे भी गर्भ ठहर गया और मै भी पेट से हो गई, अब हम

दोनों साथ साथ रहने लगे।इसी बीच तुम्हारे पापा लौटकर आए और उन्हें जब तुम्हारी मां के बारे में पता चला तो वो खुश होने के बजाए गुस्से से आग बबूला हो उठे और मां को ऊट पटांग बोलने लगे। मुझे ये सुनकर बहुत बुरा लगा और तुम्हारी मां भी चुपचाप सब सुनती रही, फिर मैंने तुम्हारे अंकल को एक दिन सब बात बताई तुम्हारे मां और पिताजी के बारे में,अंकल ये सुनकर मेरे सामने बैठ गए और रोते हुए बोले इसमें मेरी गलती है,उसके पेट में जो बच्चा है वो मेरा है। ये सुनते ही मेरे पैरो के नीचे जमीन खिसक गई, मैंने तुरंत आंटी से बोला ,"ये सब आप कहानी सुना रही हो। मै इन सब बातो पर विश्वास नहीं कर सकता। आप झूठ बोल रही हो, खबरदार मेरी मां के बारे में एक शब्द और कहा जो।" इतना कहकर मै बाहर आ गया और बगीचे में बैठकर रोने लगा। मैं मां का फोन साथ लाया था इसलिए मै मां से भी बात नहीं कर सकता था। लेकिन पिताजी से तो कर सकता था, ये सोचते ही मैंने तुरंत पापा को कॉल किया और बोला कि अगर आप अपने लड़के को जिंदा देखना चाहते हो तो मुझे सारी सच्चाई बताओ। मै किसका बेटा हूं, आपने उस दिन मां से क्या कहा था और आगरा से आपका क्या रिश्ता है?"

पिताजी भी समझ चुके थे कि मुझसे अब बात छिपाने का कोई फायदा नहीं है, उन्होंने भी मुझे सारी सच्चाई बताई की मै उनका बेटा नहीं हूं, जब वो ऑफिस के सिलसिले मै बाहर गए थे तो एक दिन मेरी मां के मेरे बॉस(काव्या के पिताजी) से संबंध बन गए थे। अब उस दिन क्या हुआ था कैसे हुआ मुझे ये सब नहीं पता लेकिन मुझे इतना पता है कि तुम मेरा खून नहीं हो!

मैंने पिताजी से पूछा कि वो इतना विश्वास से कैसे कह सकते है तो पिताजी कुछ देर रुककर बोले कि वो बाप नहीं बन सकते है इसलिए, ये बात उन्होंने अपने बॉस को बताई थी और इसी बात को लेकर मेरा और तुम्हारी मां का झगड़ा चलता था क्योंकि उसे भी नहीं पता था कि कमी किसमे है? और मै लोक लाज के डर से उससे दूर रहने लगा था। इसी बीच मुझे पता चला कि तुम्हारी मां पेट से है तो मेरी उससे लड़ाई हो गई क्योंकि मुझे पता था वो मेरा बेटा नहीं है। फिर मेरी ये बात भी सामने आ गई कि मै बाप नहीं बन सकता और फिर मां ने भी बताया कि एक दिन जब मेम अपने घर गई थी तब मां बारिश के चलते घर ना जाकर वहीं रुक गई थी। बॉस जब रात को आए होंगे तो शराब के नशे में उन्होंने मेरी मां के साथ संबंध बनाए और मां भी उनकी कोख भरने और समाज में बिना पुत्र की मां बने रहने के अभिशाप से मुक्ति को सोचकर ज्यादा देर तक खुद को नहीं रोक पाई और खुद को बॉस को समर्पित कर दिया। उस दिन के बाद बॉस भी शर्मिंदा रहने लगे और उन्होंने मुझे सारी बात बताई, मै अब कर भी क्या सकता था ये सोचकर कि तुम्हारे रूप में ही सही मुझे मेरे घर को चिराग तो मिला और फिर उसके बाद बॉस को खुद एक बेटी हुई लेकिन वो अपने किए पर इतना शर्मिंदा थे कि धीरे धीरे उनका क्रिकेट छूट गया और वो बीमार

रहने लगे और तुम्हे अपने पास रखने की जिद करने लगे। मेरे ऊपर बॉस के इतने एहसान थे कि मै उनके खिलाफ नहीं जा सकता था और मैंने तुम्हारी मां और मेम ने मिलकर ये प्लान बनाया कि तुम्हे और तुम्हारी मां को कहीं दूर भेज दिया जाए और बॉस को बताया जाए कि तुम लोग कही चले गए बिना बताए और ऐसा ही किया गया,उसके बाद बॉस को कोई लड़का नहीं हूआ और वो एक दिन चल बसे। उनके जाने के बाद उनका बिज़नेस पूरी तरह मेरे हाथो में आ गया लेकिन बॉस की एक विल साइन थी जिसमे उन्होंने लिखा था कि उनकी सारी प्रॉपर्टी के आधे हिस्सेदार तुम होगे और जब तक तुम नहीं मिल जाते तब तक तुम्हारे और बाकी बिजनेस की देखभाल मुझे करनी होगी। बॉस को इतना पता था कि तुम्हे और तुम्हारी मां को मैनें गायब करवाया है तो वो ये भी जानते थे कि उनके जाने के बाद ही सही मुझे तुम्हे तुम्हारा हक देना ही होगा वरना सारा बिजनेस चैरिटी को चला जाएगा। इसलिए जब वो नहीं रहे तो मेम साहब और उनकी बेटी तुम्हारे पास आई थी तुम्हारी मां को मनाने के लिए लेकिन मेरे डिसीजन के आगे तुम्हारी मां ने फिर मजबूर होकर मना कर दिया तुम्हे बताने से।

फिर पिताजी बोले," मुझे माफ़ करदो बेटा! मै तुम्हारा गुनहगार हूं । मैंने ही तुम्हारे सिर से तुम्हारे असली पिता का साया छीना, मै ही उन सब चीजों का जिम्मेदार हूं जिनकी वजह से आज तुम दिक्कत में हो। तुम आगरा की रियासत के असली वारिस हो और मेरे कारोबार के भी असली मालिक तुम्हीं हो।" मैंने जब उन्हें बताया कि मै आगरा में ही हूं और मैंम की तबियत खराब है तो उन्होंने मुझे उनके पास रुकने को बोला और शाम तक वो भी आ गए। फिर हम सब लोगो ने बैठकर बाते कि अब आगे क्या करना है। और आगे का सब मेरे डिसीजन पर ही डिपेंड कर रहा था। एक तरफ मेरी मां थी दूसरी तरफ मेरी सारी रियासत जिसका मै अकेला वारिस था। उस दिन मै उन्हीं के घर में रुका और सारी रात सोचता रहा। कैसे मेरी मां ने सारी जिंदगी खुद गुमशुदगी की जिंदगी बिताकर मुझे पढ़ाया लिखाया वो चाहती तो आराम से मेरे साथ आधी रियासत लेकर शान से जीती। लेकिन उन्होंने पैसे के आगे मेरा अच्छा भविष्य चुना तो फिर मै क्या सोच रहा हूं इन सब चीजों को लेकर। क्या ये रियासत मेरी जिंदगी में उस मां के प्यार से ज्यादा मायने रखते है? क्या इन सब लिए मै अपनी मां को छोड़ दूं क्योंकि मुझे पता था मेरी मां मेरे साथ रियासत में वापस नहीं आएगी अगर उसे रियासत चाहिए होती तो वो यहां से जाती ही क्यों? आज बड़ा प्यार आ रहा था अपनी मां पर की कैसे उन्होंने अपनी सारी जिंदगी मूक रहकर मुझे बोलने के लिए आगे प्रेरित किया। आज उनके एहसान और उनकी जैसी मां पाकर मै खुद को धन्य महसूस कर रहा था। क्या हूआ अगर मै किसी और का खून हूं,जन्मा तो अपनी मां की कोख से हूं ना उन्होंने भी मजबूरी में ये कदम उठाए होंगे। मुझे अपनी मां से मिलने की बेचैनी हो रही थी अब।

मैंने अपना फैसला ले लिया था। अपनी आधी संपत्ति पिताजी को और बाकी की आधी काव्या को देकर मैंने वापस अपनी मां के पास जाने का फैसला लिया और साथ ही काव्या को एक भाई के होने का वचन भी दिया के अगर उसे कभी किसी चीज की या मेरी जरूरत पड़े तो बड़े भाई को बिना किसी शर्त और शरम के बताए, उसके लिए मेरे घर के दरवाजे हमेशा खुले है। काव्या मुझे साथ रोकना चाहती थी क्वकी ऊेस पता था कि उसकी मां ज्यादा दिनों कि मेहमान नहीं है लेकिन मैंने उसे रुकने से मना किया और माथे को चूमते हुए उसे आशीर्वाद दिया कि वो अपनी जिंदगी में आगे बढ़े और सफल हो।

पिताजी को उनकी पुरानी जिम्मेदारियों में ही रहने दिया क्योंकि जिस आत्मसम्मान के चलते उन्होंने मेरी मां को ठुकराया था मै नहीं चाहता था कि अब उनका आत्मसम्मान टूटे। मैंने उनके पैर छुए और उन्हें अपना फैसला सुनाकर हमेशा की तरह उनकी जेब से पैसे निकाले, इस बार थोड़े ज्यादा निकले क्योंकि अब मुझे प्लेन से वापस आना था, मां से मिलने की बेचैनी में मै पागल हो रहा था। पिताजी ने मुझे आशीर्वाद दिया और मै तुरंत वहां से वापस लखनऊ के लिए निकल पड़ा। लखनऊ वापस आकर सबसे पहले मां से मिला और उनसे लिपटकर खूब रोया,शायद इतना कभी ना रोया हूंगा मै। आज ऐसा लग रहा था मुझे आज ही मां मिली हो, मां भी शायद कहानी समझ गई थी कि मै आगरा क्यों गया था और वो भी रोने लगी। हम दोनों काफी देर तक रोंते रहे और फिर मै मां से बोला,"मै सब छोड़ आया मां, मुझे कुछ नहीं चाहिए,मुझे सिर्फ तू चाहिए मां सिर्फ तू चाहिए। इतना कहकर मै फिर से रोने लगा और मां से फिर लिपट गया। एक बच्चा चाहे जितना बड़ा हो जाए मां के आगे बच्चा ही रहता है,मां मुझे प्यार से सहला रही थी और फिर मुझे अपने हाथो से खाना खिलाकर मुझे अपने पास सुला लिया। दूसरे दिन से उठकर मै फिर अपनी दिनचर्या में शुरू हो गया, हालांकि इन सब के बीच मेरा माइक्रोवेव का असाइनमेंट रह गया था फिर भी मै खुश था क्योंकि मेरी मां के साथ रहते मै सब कर लेता या भरोसा था मुझे। उस बात को काफी दिन बीत गए लेकिन फिर मैंने पिताजी से कभी बात नहीं की और ना ही उनका फोन आया।

एक दिन सुबह चाय पीते वक़्त दरवाजे पर दस्तक हुई मै चाय रखकर जैसे ही दरवाजा खोला देखा काव्या सामने खड़ी थी। मुझे देखते ही भैया बोलकर मुझसे लिपट गई और रोने लगी। रोते-रोते उसने बताया कि मां (काव्या की मां) गुजर गई और अब वो अकेली हो गई है। अब वो मेरे बिना नहीं रहेगी, मैंने उसे बिठाया और पानी पिलाकर फिर उससे बात की सब बारे में। मुझे खुशी थी कि मेरी बहन मेरे पास आ गई है लेकिन डर भी लग रहा था कि पता नहीं मां उसे अपनाएंगी या नहीं। इसी बीच मां भी किचेन से बाहर आई और काव्या को देखते ही दोनों लोग गले लग गए एक दूसरे के, मुझे समझ ही नहीं आया कि ये क्या हो गया अचानक से लेकिन इसका एक मतलब तो जरूर था कि मां ने काव्या को स्वीकार लिया है। मै मन ही मन बहुत खुश हुआ जभी दरवाजे से पिताजी अंदर आए,उन्हें देखकर मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा और मै दौड़कर उनसे लिपट

गया जाकर। मेरी जिंदगी बनी रहे इसलिए वो सारी जिंदगी मेरी मां से दूर रहे और अपनी जिंदगी खपा दी सिर्फ मेरी जिम्मेदारियों को निभाते निभाते। उन्होंने मुझे गले से लगा रखा और हम दोनों बाप बेटे एक दूसरे से लिपटे रहे बहुत देर तक। फिर पिताजी मां के पास गए और उन्होंने मां को भी गले से लगा लिया।

ये शायद मेरी जिंदगी में पहली बार था जब पिताजी ने मां को गले लगाया हो,पिताजी और मां दोनों की आंखो में आंसू थे और पिताजी बोले," मुझे माफ़ कर दो कमला!,मैंने सारी जिंदगी तुम्हे तुम्हारे हक से दूर रखा जो तुम्हे मिलना चाहिए था। जो कुछ भी हूआ उसमें मेरी गलती थी जिसकी सजा तुम्हे मिली और तुम सारी जिंदगी चुपचाप सहती रही।" आज शायद मेरी जिंदगी का सबसे अच्छा दिन था कि आज मेरा अधूरा परिवार फिर से एकदम पूरा हो गया था। मैंने काव्या से शुरुवात में की हूईं अपनी हरकतों के लिए मांफी मांगी और उसने गाल पर थपकी मारते हूए माफ़ कर दिया। कहने लगी जब तुम्हारे साथ थी ना भैया तो मुझे लगता था मेरा कोई अपना और भी है और आज भी मुझे वहीं लगता है इसलिए मुझे कोई शिकायत नहीं है तुमसे। मै तुम्हारी बहन हूं मुझे अब खुद से अलग ना करना। पिछली बार जब मां के साथ आई थी तो मां के मना करने की वजह से कुछ बोल नहीं पाई थी लेकिन अब कह रही हूं अब कभी मुझे जाने मत देना जैसे पिछली बार जाने दिया था। मैंने फिर मांगी मांगकर उस गले लगा लिया। फिर हम सब लोग साथ साथ रहने लगे हमेशा के लिए। काव्या का एडमिशन भी मैंने अपने कॉलेज में करवा लिया और हम दोनों दिन में साथ कॉलेज जाते उसके बाद साथ में क्रिकेट खेलते। पिताजी ने भी अब एक मैनेजर रख लिया था और अब पूरे कारोबार को वो घर से ही मैनेज कर लेते थे और साथ में ही रहते थे। मां भी अब पहले से ज्यादा खुश रहती थी। सब पहले से बहुत बेहतर हो गया था अब। मेरी जिंदगी फिर से बदल गई थी।